नूँह (हरियाणा) में माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के संदर्भ में विद्यालयी मुखिया की भूमिका

पर

एक मॉड्यूल

National Centre for School Leadership

विद्यालय नेतृत्व अकादमी

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा

गुरुग्राम – 122001

SCHOOL LEADERSHIP ACADEMY

State Council of Educational Research & Training, Haryana, Gurugram 122001

नूँह (हरियाणा) में माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा के संदर्भ में विद्यालयी मुखिया की भूमिका

*श्री जितेंद्र सिंह 'कौशिक'

भूमिका

हरियाणा भारत के समृद्ध प्रांतों में से एक है। इसके बावजूद इसका एक जिला नूँह जो सांस्कृतिक रूप से मेवात क्षेत्र का एक भाग रहा है की गिनती देश के अत्यंत पिछड़े ज़िलों में होती है। कल्पना से अधिक विचित्र व विस्मित कर देने वाला तथ्य यह है कि राजधानी दिल्ली से इसका निकटतम बिंदु लगभग 44 कि॰मी॰ तथा अधिकतम दूरी लगभग 105 कि ॰मी है। दिल्ली, आगरा और जयपुर के मध्य फ़ैले हुए मेवात अंचल का एक भाग हरियाणा के गुरुग्राम ज़िले का हिस्सा रहा। 2005 में इसे हरियाणा के ज़िले के स्वतंत्र रूप में मान्यता मिली। आरम्भ में इसका नामकरण 'सत्यमेवपुरम' में हुआ। तत्पश्चात् इसे मेवात के रूप में जाना गया। लोगों और विभिन्न सामाजिक संगठनों के निरंतर माँग को स्वीकार करते हुए हरियाणा सरकार ने वर्ष 2016 में मेवात क्षेत्र के मुख्य नगर नूँह के नाम पर इसको ज़िला नूँह का नाम दिया।

> वर्तमान में किसी महिला द्वारा सबसे अधिक 24 बच्चे पैदा करने का विश्व कीर्तिमान (गिनीज़ बुक ऑफ वर्ल्ड में अंकित) मेवात के नाम पर है।

एक प्रशासनिक इकाई की अपेक्षा सांस्कृतिक क्षेत्र के रूप में मेवात (नूँह) की विशिष्ट पहचान रही है। देश विभाजन के समय मेवात क्षेत्र, एक बड़ी भू-राजनैतिक इकाई भरतपुर, अलवर और गुड़गाँव जो उस समय संयुक्त पंजाब था, का भाग हुआ करता था।

स्त्री-पुरुष का जनसंख्या अनुपात किसी भी क्षेत्र या समाज के स्तर का मुख्य संकेतक माना जाता है। इस दृष्टि से नूँह की स्तिथि शेष हरियाणा से पर्याप्त अच्छी है। वर्ष 2001 की जनगणना के अनुसार हरियाणा में प्रति 1000 पुरुषों पर 869 महिलाएँ थी तथा मेवात में महिलाओं की संख्या प्रति 1000 पुरुषों पर 899 रही। इसी प्रकार सन 2011 की जनगणना के अनुसार हरियाणा में प्रति 1000 पुरुष पर महिलाओं की संख्या 877 के तुलना में नूँह में महिलाओं की संख्या 906 रही। इस सब के बावजूद बालिका शिक्षा के क्षेत्र में ज़िला नूँह का पिछड़ापन चौंकाने वाला है।

ज़िला नूँह की अधिकतर आबादी ग्रामीण है। आर्थिक, सामाजिक एवं राजनीतिक रूप से पिछड़े मेवात ज़िले की आजीविका का मुख्य साधन कृषि व इससे जुड़े कार्य हैं। 2011 की जनगणना के अनुसार आबादी का एक-चौथाई हिस्सा 0-6 वर्ष के बच्चों का है। सघन आबादी का सबसे

अधिक दुष्प्रभाव लड़कियों और महिलाओं पर है। साक्षरता का निम्न स्तर, सार्वजनिक परिवहन की कमी, अपर्याप्त स्वास्थ्य सुविधाएँ, पेय जल का संकट आदि महिलाओं के जीवन को कठिन बना रहा है।

उद्देश्य

प्रस्तुत मॉड्यूल के अध्ययन के पश्चात् विद्यालयी मुखियाँ,

a) नूँह जिले में विद्यालय शिक्षा के स्तर संबंधित आँकड़ों से परिचित होंगे।
b) नूँह जिले में विद्यालय शिक्षा संबंधित तथ्यों से अवगत होंगे।
c) नूँह जिले में विद्यालय शिक्षा के संदर्भ में आने वाली सामाजिक एवं संस्थागत कठिनाइयों से परिचित होंगे।
d) नूँह जिले में विद्यालय शिक्षा की गुणवत्ता को बढ़ाने में विद्यालयी मुखियाँ की भूमिका को जानेगे।

औपचारिक विद्यालय व्यवस्था

नूँह के 90% विद्यालय सरकार द्वारा संचालित है। अधिकतर राजकीय विद्यालय प्राथमिक स्तर के हैं। कम नामांकन तथा कक्षा में कम उपस्तिथि, संस्थागत व व्यवस्थागत शिथिलता को प्रदर्शित करती है। परिणाम, लड़के-लड़कियाँ दोनों ही अपनी पढ़ाई को जारी नहीं रख पाते है। प्राइवेट स्कूलों में नामांकित विद्यार्थियों में से 76.4% लड़के तथा 23.6% लड़कियाँ हैं। कुल लड़कों में 53.8% मुस्लिम तथा कुल लड़कियों में मात्र 10% मुस्लिम लड़कियाँ हैं। स्पष्ट है, क्षेत्र का मेव समुदाय लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को प्राइवेट विद्यालयों में पढ़ाने को प्राथमिकता देता है।

इस सर्वे के दौरान हम कई इस्लामिक मदरसों के संचालकों से मिलें उनमें से कुछ ने बातचीत के दौरान बताया कि गणित-विज्ञान की शिक्षा शैतानी शिक्षा है तथा मदरसे की शिक्षा (दीनी तालीम) अल्लाह का आदेश है। अतः स्कूल की औपचारिक शिक्षा अधिक महत्वपूर्ण नहीं है। उनका दृढ़ विचार है कि लड़कियों/महिलाओं में नैतिक मूल्यों के ह्रास का कारण स्कूली शिक्षा ही है।

यदि हम खंडवार बात करें तो पाते है कि नूँह खंड में सबसे अधिक विद्यालय है। दूसरे पायदान पर पुनहाना है।यही नहीं, इन दोनो खंडों में प्राइवेट स्कूलों की संख्या भी अन्य शेष खंडों से अधिक है। प्राथमिक स्तर पर पुनहाना में सबसे अधिक कन्या विद्यालय है जबकि उच्च प्राथमिक स्तर के कन्या विद्यालयों की संख्या नूँह में सबसे अधिक है। मदरसों की संख्या में पुनहाना पहले तथा नूँह दूसरे स्थान पर है। निजी माध्यमिक स्कूलों की संख्या तावड़ू खंड में सबसे अधिक है। प्राथमिक व उच्च प्राथमिक स्तर पर खंड पुनहाना में बालिकाओं का नामांकन सबसे अधिक है। माध्यमिक स्तर पर नामांकन में नूँह खंड सबसे आगे है। जबकि

वरिष्ठ माध्यमिक स्तर पर बालिकाओं के नामांकन में तावड़ू खंड सबसे आगे है। स्पष्ट है कि खंड तावड़ू में उच्च शिक्षा तक लड़कियों की पहुँच अधिक है। खंड नूँह के निजी विद्यालयों की तुलना में राजकीय विद्यालयों में लड़के लड़कियों की संख्या में अधिक अंतर है। खंड तावड़ू के राजकीय और निजी विद्यालय में लड़के-लड़कियों के नामांकन दर में सबसे कम अंतर है। मदरसों में पढ़ने वाली लड़कियों की संख्या सबसे अधिक पुनहाना में है। यह नूँह - नगीना के मदरसों में पढ़ने वाली लड़कियों का लगभग तीन गुना है। स्कूलों की संख्या व नामांकन की दर दोनों ही दृष्टि से नगीना खंड सबसे पिछड़ा हुआ है।

औपचारिक शिक्षा प्राप्त करने में चुनौतियाँ

सामाजिक दायित्व व संस्कारवान होने के नाम पर मेव समुदाय की लड़कियों को अनेक अतिरिक्त प्रतिबंधों का सामना करना पड़ता है जिसका दुष्प्रभाव उनके शिक्षा प्राप्ति के प्रयासों पर पड़ता है। लड़कियाँ भोजन बनाना, ईंधन के लिए लकड़ियाँ लाना, उच्च जन्म दर होने के कारण अपने छोटे भाई- बहनों की देख रेख करना व धार्मिक शिक्षा पर समय देना आदि अनेक घरेलू दायित्वों को निभाना पड़ता है जिसके कारण उन्हें स्कूली शिक्षा के लिए पर्याप्त समय नहीं मिलता। बचपन से ही यह सब देखते रहने के कारण उनके अंदर एक भाग्यवादी दृष्टिकोण भी विकसित होने लगता है। इन सब कार्यों को वे अपनी नियति मान लेती हैं। इसका एक कारण यह है कि न केवल उन्हें बल्कि उनक़ी माताओं व बड़ी बहनों को भी मेवात से बाहर की दुनिया को देखने-समझने विशेषकर, महिलाओं की स्तिथि को समझने का अवसर बहुत ही कम मिलता है। सामान्यत: उन्हें अपनी क्षमता और योग्यता का बोध नहीं होता। परिवार और समुदाय के संबंध में विचार करने और फ़ैसला लेने की उनकी सहज योग्यता को कुंठित कर दिया जाता है।

<u>मदरसा एवं मेवात</u>

मदरसा इस्लामिक अध्ययन व अध्यापन के केंद्र हैं। ये निजी तौर पर या ट्रस्टों के द्वारा स्थापित और संचालित किए जाते हैं। प्रति वर्ग कि॰मी क्षेत्र में मदरसों की संख्या की दृष्टि से मेवात भारत में पहले स्थान पर है। मेव समुदाय इन मदरसों के संचालन के लिए बढ़चढ़ कर दान भी देता है। इन मदरसों का मुख्य उद्देश्य दीनी तालीम {धार्मिक शिक्षा} प्रदान करना होता है किंतु आधुनिक युग के बढ़ते दबाव के कारण अब इनमें उर्दू, हिंदी व पर्यावरण विषय के अध्ययन की सुविधा भी उपलब्ध होने लगी है। धार्मिक शिक्षक तैयार करने की दृष्टि से मेवात का विशेष स्थान है। देश में सबसे अधिक इस्लामिक अध्येता (मौलवी, इमाम, हाफ़िज़ आदि) मेवात पैदा करता है। इन मदरसों में पढ़े युवक मेवात सहित देश-विदेश के विभिन्न भागों में इस्लामी शिक्षा देने का कार्य करते हैं।

कम साक्षरता और विकास में पिछड़ेपन होने के कारण शिक्षा के मूल्य एवं महत्व की जानकारी सामान्य जन को नहीं है। संकीर्ण व रूढ़िवादी नेतृत्व और विकास की मुख्यधारा से दूरी शिक्षा के लिए प्रतिकूल वातावरण की रचना करती है। राजकीय विद्यालयों में विशेषकर पुनहाना, नगीना और फ़िरोज़पुर झिरका के विद्यालयों में शिक्षकों की कमी भी शिक्षा के उत्थान में एक बहुत बड़ी चुनौती है। ग्रामीण मेवात में जहां प्रत्येक गाँव जंगल खेतों से घिरा हुआ है, वहाँ अभिभावक अपने बच्चो (विशेषकर लड़कियों को) को दूसरे गाँव या क़स्बे में पढ़ने के लिए भेजने में संकोच करते हैं। उन्हें अपने बच्चों के यौन उत्पीड़न की आशंका बनी रहती है। मेव समुदाय में कम आयु में विवाह करने का प्रचलन है। उसके पीछे ग़रीबी, सामाजिक दबाव, अनुकूल लड़का या लड़की न मिल पाने की आशंका काम करती है।

माध्यमिक कक्षाओं में कम नामांकन व दैनिक उपस्तिथि में कमी का एक कारण किशोरावस्था में आने वाले शारीरिक एवं मानसिक बदलाव हैं। यौवन जन्य बदलाव के बारे में व्याप्त भ्रांतियाँ, सेनेटरी नेपकिन के उपयोग की जानकारी न होना व उनके उपयोग में संकोचशील होना, समयपूर्व गर्भधारण, एनीमिया आदि कारक बड़ी होती लड़कियों के स्कूल छोड़ने की प्रवृति को बढ़ावा देते हैं।

49% teaching post in Nuh govt. schools are vacant

मेवात क्षेत्र बारहवीं कक्षा के बाद प्राथमिक विद्यालयों में अध्यापक बनने के लिए प्रशिक्षण (D.Ed) प्राप्त करना यहाँ के युवाओं व उनके अभिभावकों की बड़ी आकांक्षा रही है। सरकारी विद्यालय में प्राथमिक शिक्षक बनना यहाँ अच्छी उपलब्धि मानी जाती है।

सन 1332 में नूँह तहसील में अरावली के पास इसलामिया अरेबिया दरगाह हज़रत शेख़ मूसा रहमतुल्लाह: की स्थापना हुई। यह मेवात का सबसे पहला मदरसा था। बीसवीं सदी में मदरसों की संख्या में आश्चर्यजनक वृधि हुई है।निम्न सारिणी देखिए :

वर्ष	मदरसों की संख्या
1332	01
1900-1925	06
1925-1950	06
1950-1975	06
1975-2000	22
2000-2010	39
2011-2020	21

मेव समुदाय अपने बच्चों को उर्दू सीखने व दीनी तालीम (इस्लामिक शिक्षा) हासिल करने के लिए मदरसों में भेजता है। मुस्लिम संस्कृति की पहचान को बनाए रखने के विचार से अरबी भाषा के अध्ययन को विशेष महत्व दिया जाता है। जो विद्यार्थी इस्लामिक शिक्षा के क्षेत्र में कैरियर बनाना चाहते है, वे मौलवीयत की पढ़ाई करते है, उन्हें फेवा (FEWA) मदरसों में व्यावसायिक शिक्षा भी दी जाती है।

लड़के मदरसा शिक्षा के साथ साथ औपचारिक शिक्षा के लिए स्कूल भी जाते है लेकिन लड़कियों के संदर्भ में अधिकतर अभिभावकों का मानना है कि मुस्लिम संस्कृति और नैतिक मूल्यों के पीढ़ीगत संचरण के लिए मदरसा की शिक्षा ही उनके लिए पर्याप्त है। अभी भी ऐसे लोगों की बड़ी संख्या है जो स्कूली शिक्षा पर इस्लामिक शिक्षा को तरजीह देते हैं। पुनहाना खंड में सबसे अधिक 33 मदरसे है लेकिन नामांकन सबसे अधिक नूँह में है। मदरसों में बालिका नामांकन की दृष्टि से पुनहाना सबसे आगे है।

विद्यालय से पलायन की स्तिथि

पलायन की स्तिथि प्रतिशत में

वर्ष 2016-2017

कक्षा	लड़के	लड़कियाँ	समग्र रूप में
1	1.17	0	0.09
2	3.59	8.24	5.7
3	6.63	12.34	9.38
4	7.24	12.15	9.36
5	**13.24**	**20.72**	**16.82**
6	7.72	13.43	10.19
7	10.53	15.84	12.75
8	**18.55**	**40.37**	**12.87**

सौजन्य: वार्षिक योजना एवं बजट, समग्र शिक्षा अभियान, नूँह

उपर्युक्त तालिकाओं से स्पष्ट है कि कक्षा पाँचवीं व आठवीं के बाद स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों की संख्या बहुत अधिक बढ़ जाती है। इससे भी अधिक चिंतनीय विषय यह है कि लड़कों की तुलना में लड़कियों के स्कूल छोड़ने की दर लगभग दोगुना है। विभिन्न सर्वेक्षणों के आधार पर कहा जा सकता है कि स्कूल छोड़ने वाली लड़कियों की औसत आयु बारह वर्ष तथा लड़कों की चौदह वर्ष है। दोनों तालिकाओं के मध्य एक अंतर ध्यातव्य है कि वर्ष 2020-21 में बड़ी कक्षाओं में स्कूल छोड़ने वाले विद्यार्थियों में लड़कों की प्रतिशत संख्या लड़कियों से अधिक है।

शैक्षिक गुणवत्ता के मानक पर नूँह में विद्यालय शिक्षा

बच्चों के लिए विद्यालय एक रमणीय व आकर्षक स्थल होना चाहिए न कि त्रास उत्पन्न करने वाला। गुणवत्ता हीन और नीरस शैक्षिक अनुभव छात्रों के मन में स्कूल के प्रति वितृष्णा का भाव भर देते है। 'गुणवत्ता' के बहुआयामी स्वरूप में हम सबसे पहले विद्यालय की आधारभूत संरचना व सुविधाओं की बात करते है।इसके अंतर्गत बाह्य हस्तक्षेप से मुक्ति के लिए सुदृढ़ चारदीवारी, स्वच्छ कक्षा-कक्ष, सड़क मार्ग द्वारा विद्यालय तक सुगम पहुँच, खेल-मैदान, लड़के लड़कियों के लिए अलग-अलग शौचालय, पेय -जल की सुविधा, दिव्याँग विद्यार्थियों के लिए रैम्प व सहायक उपकरणों की उपलब्धता, बिजली ब कम्प्यूटर लैब की व्यवस्था आते हैं। विगत वर्षों में नूँह में विद्यालयों में आधारभूत सुविधाओं का विस्तार हुआ है। इस दिशा में ग़ैर सरकारी संगठनों के प्रयास उल्लेखनीय है। किंतु इन संगठनों के कार्य नूँह और तावड़ू खंड तक ही सीमित है। अनेक प्रयास के बावजूद पेय जल की उपलब्धता आज भी मेवात में एक चुनौती बनी हुई है क्योंकि यहाँ भूमिगत जल खारा है। स्कूलों में अनवरत बिजली आपूर्ति के लिए सौर पैनल लगाने का कार्य बहुत तेज़ी से हो रहा है। ज़िला मुख्यालय तथा खंड मुख्यालयों व इनके निकट वर्ती अधिकतर स्कूलों में स्मार्ट कक्षाओं की स्थापना भी हुई है।

<u>मेवात मे स्कूल छोड़ने के कारण</u>

- एक-चौथाई अभिभावकों का मानना है कि स्कूलों में अध्यापकों की संख्या पर्याप्त नहीं है।
- 14% लोगों के विचार में लड़के 12-14 वर्ष की आयु में ही काम करना आरम्भ कर देते है।
- दस प्रतिशत लोग कहते है कि लड़के स्कूल की औपचारिक शिक्षा की तुलना में मदरसा शिक्षा को प्राथमिकता देते है।
- इसके अतिरिक्त विद्यालयों में पेयजल, शौचालय, बिजली जैसी आधारभूत सुविधाओं की कमी भी स्कूल छोड़ने का कारण रही हैं।
- लड़कों के संदर्भ में परिवारों की कमजोर वित्तीय स्तिथि स्कूल छोडने का कारण रहती है।
- लड़कियों के संदर्भ में सामाजिक-धार्मिक परंपरा, वैवाहिक रीति-रिवाज व रूढ़िवादी दृष्टिकोण स्कूल छोड़ने के मुख्य कारण हैं।
- इसके अतिरिक्त दूर-दराज के गाँवों में कन्या माध्यमिक व कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालयों का न होना भी लड़कियों द्वारा आठवीं कक्षा के बाद स्कूल छोड़ने का विशेष कारण है।

संरचनात्मक सुविधाओं की बहुल उपलब्धता व शासन के प्रत्यक्षतः लाभकारी प्रोत्साहन के परिणाम स्वरूप स्कूलों में नामांकन की संख्या में आश्चर्यजनक वृद्धि हुई है किंतु विद्यार्थियों की उपस्थिति में अपेक्षित सुधार देखने को नहीं मिल रहा है। अनुपस्थिति के कई कारणों में

से एक कारण आवश्यक संख्या में शिक्षकों का अभाव है। शिक्षकों के अभाव में स्मार्ट क्लासरूम, गणित-विज्ञान के उपकरण, जैन-सेट, सौर पैनल की दशा बिना चालक वाले हवाई जहाज़ जैसी है। महिला शिक्षक व छात्राओं के अनुपात की दृष्टि से खंड नूँह व तावडू को छोड़कर अन्य तीनों खंडों की स्तिथि अत्यंत दयनीय है। सीमावर्ती ज़िले गुरुग्राम, पलवल से दूर होने के कारण इन खंडों में महिला शिक्षक जाना नहीं चाहती हैं। नूँह व तावडू खंड के अलावा अन्य खंडों में अध्यापन करना उनके लिए व्यैक्तिक स्तर पर असुविधाजनक है। कुल शिक्षकों में महिला शिक्षकों का प्रतिशत लगभग बहुत कम है। इस पर भी एक विडम्बना यह है कि अस्सी प्रतिशत महिला शिक्षक नूँह और तावडू खंड में कार्यरत है। इसके कारण बालिका शिक्षक को बढ़ावा देने के तमाम प्रयास फलीभूत नहीं हो रहे है। कहीं तो शिक्षक-शिक्षार्थी का अनुपात 1:125 या इससे भी अधिक है। कई बार अध्यापकों के अभाव को दूर करने ले लिए विद्यालय स्तर पर, प्राथमिक कक्षाओं में पढ़ाने वाले शिक्षकों को उच्च प्राथमिक कक्षाओं व माध्यमिक कक्षाओं में समायोजित किया जाता है। लेकिन स्तर के अनुरूप शैक्षिक योग्यता व अनुभव न

मेवात एवं जागरूकता

मेवात के विषय में एक सामान्य धारणा है, विशेषकर उन लोगों की जो मेवात को दूरस्थ (चंडीगढ़ व पंचकूला) में बैठ कर अनुमान लगाते हैं कि यहाँ जागरूकता का अभाव है। सामान्यत: ऐसा नहीं है। प्रत्यक्षतः लाभकारी सरकारी योजनाओं व क़ानून की विभिन्न धाराओं का जितना ज्ञान यहाँ के अनपढ़ या कम पढ़े लिखे व्यक्ति को है वह कभी-कभी सुशिक्षित अध्यापकों को भी चौका देता है। गोत्र व पाल की राजनीति में वर्गीकृत लोगों के विमर्श के केंद्र में स्थानीय से लेकर अंतरराष्ट्रीय मुद्दे आश्चर्य चकित करते है। गुरुग्राम, रेवाड़ी, पलवल जैसे समीपवर्ती ज़िलों में क्या हो रहा है, इसका संज्ञान उनको हो या न हो लेकिन इज़राइल और फ़िलिस्तीन के मध्य क्या चल रहा है, इसका ज्ञान उनको अवश्य रहता है। हालाकि, इतनी जागरूकता के बावजूद शिक्षा के क्षेत्र में सबसे निचले पायदान पर खड़ा मेवात कौतूहल उत्पन्न करता है।

होने के कारण विद्यार्थियों को कोई विशेष लाभ नहीं होता। अपितु शिक्षण के गुणवत्ता हीन होने के कारण विद्यार्थियों में अरुचि का भाव उत्पन्न होने की सम्भावना बनी रहती है।

अस्थायी शिक्षकों की नियुक्ति भी गुणवत्ता पूर्ण शिक्षण में एक रुकावट है इस श्रेणी के अध्यापकों को व्यावसायिक दक्षता बढ़ाने हेतु विभाग द्वारा आयोजित प्रशिक्षण कार्यक्रमों में प्रतिभागिता करने का अवसर नहीं मिलता। परिणाम, शिक्षा क्षेत्र में होने वाले नवाचारों से इनका परिचय नहीं हो पाता। अंतत: इन सबका ख़ामियाज़ा विद्यार्थियों को भुगतना पड़ता है।

शहरी या कस्बाई क्षेत्रों की तुलना में ग्रामीण अंचल में स्थापित सरकारी स्कूलों में लड़कियों के नामांकन व उपस्थिति की दशा अत्यंत दयनीय है। विगत आठ दस वर्षों में सरकारी स्कूलों में मिलने वाली सुविधाओं जैसे स्टाइफंड, वर्दी, मध्याह्न भोजन आदि के प्रलोभन में नामांकन तो बढ़ा है लेकिन कक्षा में लड़कियों की उपस्तिथि व विद्यालय में रुकने की समयावधि में अपेक्षित वृधि नहीं हुई है।

गुणवत्तापूर्ण शिक्षा और विद्यार्थियों की संख्यात्मक वृद्धि में विद्यालय नेतृत्व की भूमिका

प्रायः विभिन्न मंचों से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की बात होती रहती। मात्र साक्षर होना और शिक्षित होना दो अलग अलग स्तिथियाँ हैं। मेवात के संदर्भ में बात करे तो यहाँ साक्षरता और शिक्षा में कोई विभाजक रेखा नहीं है। येन-केन-प्रकारेण किसी शिक्षा बोर्ड या विश्वविद्यालय प्रमाण पत्र के रूप में काग़ज़ का टुकड़ा लेना भर ही यहाँ कि लोगों के लिए शिक्षित होने का प्रमाण है। मेवात में शिक्षा प्रचार-प्रसार के नाम पर नामचीन विद्वान व शिक्षा विशेषज्ञ मात्र आंकड़ों तथा शब्दाडंबर तक ही सीमित प्रतीत होते हैं। तमाम प्रयासों और सरकार द्वारा भारी भरकम वित्तीय संसाधनों के प्रवाह के बावजूद अपेक्षित परिणाम नहीं आ रहे हैं। धरातल पर देखें तो इसके तीन वास्तविक कारण सामने आते हैं। सघन आबादी, संकीर्ण रूढ़िवादी सोच, शिक्षकों की उपलब्धता का विभिन्न खंडों व स्कूलों में असमान वितरण।

उपर्युक्त तीनों कारणों पर पर्याप्त चर्चा हो चुकी है। विशेष ध्यान आकर्षित करने वाला तथ्य यह कि मेवात से बाहर के लोगों की सामान्य धारणा यह है कि यहाँ की सघन आबादी का मुख्य कारण अनपढ़ता या जागरूकता का अभाव है। एक सर्वे इस धारणा को सिरे से ख़ारिज करता है। मेव समुदाय के अनपढ़ ही नहीं अपितु पढ़े लिखे लोग यहाँ तक कि शिक्षकों के भी 6-6, 7-7 बच्चे देखने को मिलते हैं।

नाम न बताने की शर्त पर एक स्कूल की प्रधानाचार्य ने बताया कि उनके स्कूल में कार्यरत एक शिक्षिका को आठवें बच्चे की माता बनने का अवसर प्राप्त हुआ है। यहाँ जनसंख्या वृद्धि के मूल में अपना सामाजिक और राजनैतिक दबदबा बनाए रखने की सोच काम करती है। अस्तु, इस पर विशेष चर्चा करना यहाँ समीचीन नहीं है।

संकीर्ण रूढ़िवादी विचारों के प्रभावी होने के कारण विद्यालयों में लड़कियों की उपस्तिथि कम रहती है। आम जन की बात छोड़े ऐसे उदाहरणों की कमी नहीं है जहां मुस्लिम समुदाय के शिक्षक भी अपनी लड़कियों को नियमित रूप से स्कूल भेजने में संकोच करते हैं। ऐसी प्रतिकूल परिस्तिथियों में एक स्कूल मुखिया के लिए अपने विद्यार्थियों को अक्षर ज्ञान से गुणवत्ता शिक्षा की ओर ले जाना एक कठिन कार्य है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा से तात्पर्य है शिक्षा का वह

स्वरूप जो अक्षर ज्ञान तक सीमित नहीं है और न ही जानकारियों का ढ़ेर और ज्ञान का समुच्चय मात्र है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा ऐसी शिक्षा है जो छात्रों के अंदर कारण-कार्य के सम्बंध की समझ विकसित करे, जो उन्हें तर्कपूर्ण और विवेकशील बनाए जो उनके हृदय का विस्तार कर उसे राष्ट्रीय और राष्ट्रीय से वैश्विक बना दे। मेवात की जटिल सामाजिक संरचना और अपने सीमित अधिकार के साथ स्कूल नेतृत्व बहु आयामी जिम्मेदारियाँ लिए हुए हैं।

1. उपलब्ध संसाधनों का अधिकतम उपयोग :

यद्यपि संसाधन विशेष किसी अन्य संसाधन का पूर्ण विकल्प नहीं हो सकता तथापि पिछले कुछ वर्षों में, विशेषकर कोरोना काल में समाज के अन्य क्षेत्रों की तरह शिक्षा के क्षेत्र में भी नई वैकल्पिक व्यवस्था देखने को मिली है। कक्षा कक्ष में अध्यापन का स्थान पर्याप्त अंश में ऑनलाइन अध्यापन ने ले लिया है। इन परिस्तिथियों में अध्यापकों की कमी से जूझ रहे विद्यालय के छात्रों को बहुत लाभ मिला है। स्कूल मुखिया अध्यापकों की कमी की स्थिति में शिक्षण अधिगम सामग्री (TLM) के आधुनिक उपकरणों जैसे कम्प्यूटर, प्रोजेक्टर, स्मार्ट बोर्ड, पेन ड्राइव व यू-ट्यूब चैनल online classes आदि का भरपूर उपयोग कर सकते हैं। अर्थात मिश्रित अधिगम (blended learning) को विद्यालय शिक्षा का अभिन्न अंग बनाने के प्रयास करे। इनके माध्यम से विषय विशेषज्ञों द्वारा तैयार पाठों (भाषण व मुद्रित पाठ्य सामग्री) तक विद्यार्थियों की पहुँच सरल हो जाएगी।

मिश्रित शिक्षा प्रणाली

मिश्रित शिक्षा प्रणाली या ब्लेंडेड शिक्षा एक औपचारिक शिक्षा कार्यक्रम है जिसमे विद्यार्थी पाठ्यक्रम का एक भाग कक्षा मे पूरा करता है और दूसरा भाग डिजिटल एवं ऑनलाइन संसाधनो का प्रयोग करके सिद्ध करता है। ब्लेंडेड शिक्षा मे समय, जगह, विधि तथा गति का नियंत्रण विद्यार्थी के हाथ मे है।

विद्यालय मुखिया ऐसी वैकल्पिक व्यवस्था कर सकता है कि वरिष्ठ कक्षाओं के विद्यार्थी अपने विद्यालय की छोटी कक्षाओं के विद्यार्थियों को स्व प्रेरणा से पढ़ा सकें। इसका दोहरा लाभ होगा। बड़े विद्यार्थियों में स्वाध्याय की आदत का विकास होगा तथा उनके अभिव्यक्ति कौशल में भी निखार आएगा। अभिव्यक्ति कौशल किसी भी व्यक्ति के व्यक्तित्व का अत्यंत प्रभावी पक्ष होता है। उनमें विषय विशेष के ज्ञान और योग्यता का भी विस्तार होगा।

कई बार हम देखते हैं कि विद्यालय के निकटवर्ती परिवेश में मूल्यवान संसाधन अनुपयोगी दशा में उपलब्ध रहते हैं। सेवा निवृत शिक्षक, चिकित्सक, सैन्यकर्मी या अधिकारी, बैंककर्मी, अध्ययनरत कॉलेज विद्यार्थी आदि ऐसे ही मूल्यवान मानव संसाधन हैं जिनका बेहतर उपयोग स्कूल नेतृत्व द्वारा किया जा सकता है। इनके द्वारा प्रदत्त ज्ञान व अनुभव में छात्रों की साझेदारी निश्चित रूप से विद्यार्थियों में ज्ञान वर्धन और रचनात्मक प्रेरणा का कार्य करेगी।

2. **समुदाय के लोगों से सम्पर्क :**

a) विद्यालय मुखिया द्वारा स्थानीय समुदाय के विभिन्न संगठनों के प्रमुखों व आम लोगों से सम्पर्क विद्यालय में छात्रों की उपस्तिथि व अनुशासन को बनाए रखने में बहुत सहायक हो सकता है। मेवात के संदर्भ में, दीनी तालीम के वाहक मुल्ला- मौलवियों को आश्वस्त किया जाना चाहिए कि दीनी तालीम व दुनियावी तालीम एक-दूसरे के पूरक हैं न कि परस्पर विरोधी। आत्मा के पोषण के साथ-साथ देह का पोषण भी ज़रूरी है।
b) इसके अतिरिक्त स्कूल नेतृत्वकर्ता समाज के प्रबुद्ध लोगों से सम्पर्क कर समय-समय पर या कम से कम विशेष अवसरों पर नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति व अपने विद्यालय की वार्षिक योजना के बारे में चर्चा कर सकता है।
c) मुखिया विद्यालय के निकटवर्ती परिवेश में रहने वाले क्षेत्र विशेष में ख्यातिप्राप्त लोगों को आमंत्रित कर छात्रों से उनके साथ संवाद करने की व्यवस्था कर सकता है। इसका लाभ यह होगा कि विद्यालय में कार्यरत शिक्षकगण व विद्यालय नेतृत्व के प्रयासों के प्रति लोगों का विश्वास बढ़ेगा, भौतिक सुविधाओं की उपलब्धता में बाह्य सहयोग की सम्भावना बनेगी तथा विद्यालय के वातावरण की एकरसता दूर होने पर छात्र अधिक समय तक विद्यालय में रुकेंगे। यही नहीं वे पाठ्य पुस्तकों से बाहर की दुनिया का साक्षात्कार करेंगे। जीवन के बहुरंगी व बहुआयामी स्वरूप से छात्रों को वंचित नहीं किया जा सकता।
d) मानव मन नित नवीनता का अभिलाषी है। नवीनता ही कौतूहल को जन्म देती है तथा मनुष्य को आकर्षित करती है। स्कूल मुखिया का यह दायित्व है कि वह छात्रों की आयु व कक्षा स्तर को देखते हुए यथा अवसर नवीनता का सृजन करे। साथ ही अध्यापको को शिक्षण मे नवीनता लाने के लिए प्रोत्साहित करे।

3. शैक्षिक पर्यटन को बढ़ावा

सामान्यत: व औपचारिक अर्थ में 'शैक्षिक पर्यटन' का सम्बन्ध वैज्ञानिक एवं ऐतिहासिक महत्व के प्राचीन स्थलों का भ्रमण, भौगोलिक भू-आकृतियों के बाह्य रूप व आंतरिक संरचना का दर्शन तथा महा पुरुषों के स्मारक स्थलों या प्राचीन भवनों की वास्तुकला का दर्शन रहा है किंतु, जिस प्रकार 'शिक्षा' को परिभाषा की सीमित परिधि में नहीं बांधा जा सकता उसी प्रकार 'शैक्षिक पर्यटन' को भी इतिहास, भूगोल या विज्ञान के किसी निश्चित ढाँचे में नहीं रखा जा सकता। अपने व्यापक अर्थ में हर प्रकार का पर्यटन शैक्षिक पर्यटन के दायरे में आता है क्योंकि वह व्यक्ति के व्यक्तित्व के किसी न किसी अंश का निर्माण या पोषण करता है। यह किसी व्यक्ति के लिए क्षुद्रता से विराटता की ओर ले जाने का मार्ग प्रशस्त करता है। मेवात के लोगों में विशेषकर मेव महिलाओं द्वारा पर्याप्त मात्रा में पर्यटन नहीं करना बालिका शिक्षा के विस्तार में एक बड़ा अभाव है और मेवात में बालिका शिक्षा निम्न स्तर पर है। लड़कियों को औपचारिक शिक्षा के लिए स्कूल भेजना है या नहीं, इसका निर्णय परिवार की महिलाएँ ही अधिकतर करती हैं। आर्थिक कमजोरी व रेल यातायात की सुविधा न होने के कारण अधिकतर महिलाओं के लिए पर्यटन आज भी दिवास्वप्न है। अस्तु/अर्थात, प्रश्न यह है कि इस स्तिथि में स्कूल नेतृत्व

से क्या अपेक्षा हो सकती है? हरियाणा स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा राजकीय विद्यालयों के छात्र-छात्राओं को राज्य तथा राज्य से बाहर निशुल्क भ्रमण की व्यवस्था करने का प्रावधान है। मेवात में बालिका शिक्षा स्कूल मुखिया को चाहिए कि वह भ्रमण पर जाने वाले विद्यार्थियों के दल में छात्राओं की संख्यात्मक प्रतिभागिता को बढ़ाए क्योंकि आज की लड़कियाँ भविष्य की माताएँ हैं। इससे लड़कियों का दृष्टिकोण व्यापक और उदार बनेगा तथा कालांतर में बालिका शिक्षा के प्रसार में सहायक होगा।

छात्राओं को ऐसे कार्यस्थलों, व्यावसायिक प्रतिष्ठानों यथा कोर्पोरेट हाउस, बैंक, चिकित्सालय, विद्यालय, कॉल सेंटर, आदि का भ्रमण अवश्य कराया जाना चाहिए जहां काम करने वालों में अधिकतर महिला हों। इससे उनको लिंग भेद की निस्सारता का बोध होगा। साथ ही वे इस बात को समझ पाएँगी कि शिक्षा केवल लड़कों के लिए ही नहीं अपितु उनके लिए भी ज़रूरी है। इस कार्य के लिए स्कूल मुखिया विद्यार्थियों के कल्याण के लिए जमा की गई निधियों का भी उपयोग कर सकते हैं।

स्कूल प्रबंधन समिति के मुखिया भी तथा सदस्यों को विश्वास में लेकर भ्रमण पर जाने वाले विद्यार्थियों के दल में उनके कुछ महिला अभिभावकों को भी सम्मिलित किया जा सकता है। इससे माताएँ भी मेवात से बाहर की दुनिया में शिक्षाजनित बदलावों को अपनी आँखों से देख सकेंगी। उनकी समझ में आएगा की जीवन में सुखद परिवर्तन के लिए शिक्षा ही एक मात्र साधन है।

4. **शैक्षिक पाठ्यक्रम में व्यवसायिक शिक्षा का समावेश**

विगत लगभग एक दशक से केंद्र व राज्य सरकार द्वारा विद्यालय तथा महाविद्यालय स्तर पर कौशल युक्त भारत के निर्माण के लिए NSQF (NATIONAL SKILL QUALIFICATION FRAMEWORK) के अंतर्गत युवाओं को कुशल बनाने के लिए रोज़गारोन्मुखी शिक्षा देने का कार्य हो रहा है ताकि हमारे शिक्षा संस्थान प्रमाण पत्र और डिग्रियों के मुद्रक और वितरक मात्र बनकर न रह जाएँ। धरातलीय वास्तविकता की हम बात करें तो पाते है कि हम इस लक्ष्य के आस पास भी नहीं है। स्वयं कौशल हीन, अल्पकालिक शिक्षकों से कुशल युवाओं के गढ़ने की आशा रखना व्यर्थ है। इसके अतिरिक्त अलग अलग क्षेत्रों की जल वायु, प्राकृतिक संसाधनों और कार्य संस्कृति में पर्याप्त विभिन्नता देखने को मिलती है। इसलिए अलग-अलग क्षेत्रों में स्तिथ विद्यालयों के लिए लगभग एक जैसी व्यवसायिक शिक्षा देना तर्क संगत नहीं है। किसी भी क्षेत्र विशेष के विद्यार्थियों को दी जाने वाली व्यावसायिक शिक्षा यथासंभव उस क्षेत्र की जलवायु, प्राकृतिक संसाधनों, कार्य संस्कृति की परम्पराओं और सामाजिक रीति-रिवाजों के अनुकूल होनी चाहिए।

a) **Automobile संबंधी प्रशिक्षण** - कुछ हुनर या कौशल ऐसे होते है बच्चा जिन्हें अपने परिवार में रह कर सहजता से सीख लेता है। उसके लिए उसे किसी विशेष औपचारिक

प्रशिक्षण की आवश्यकता नहीं होती है। स्कूल मुखिया का दायित्व है की वह अपने विद्यार्थियों के लिए उपर्युक्त तत्वों को दृष्टि में रखते हुए शिक्षा विभाग के समक्ष कौशल विशेष के प्रशिक्षण की सुविधा प्रदान करने का प्रस्ताव रखता रहें। यह ठीक है की कौशल विशेष के लिए संसाधन उपलब्ध कराना व शिक्षकों की नियुक्ति स्कूल मुखिया के अधिकार क्षेत्र में नहीं है। ऐसी स्तिथि में वह क्या कर सकता है ? इसका उत्तर सरल नहीं है। मेवात के संदर्भ में हम कह सकते हैं कि यहाँ कृषि के बाद दूसरा सबसे बड़ा व्यवसाय ट्रक चालन (TRUCK DRIVING) तथा इनके रख-रखाव से जुड़े कार्य हैं। अतः AUTOMOBILE के क्षेत्र में छात्रों के लिए काफ़ी सम्भावना है। स्कूल मुखिया पुस्तकीय ज्ञान के साथ साथ, अभिभावकों की सहमति व शिक्षा विभाग की अनुमति से स्थानीय शहरों में संचालित निजी AUTOMOBILE WORKSHOPS में छात्रों को इससे संबंधित कौशल विद्यालय में करवाने और सीखने की व्यवस्था कर सकता है।

b) **कृषि संबंधी कार्य -** मेवात की जलवायु व मिट्टी खट्टे फलों के उत्पादन तथा उस पर आधारित खाद्य प्रसंस्करण उद्योग के लिए बहुत अनुकूल है। तैयार माल को बाज़ार तक पहुँचने के लिए सड़क मार्ग की सुविधा भी है। निर्माणाधीन दिल्ली-बड़ोदरा-मुंबई राष्ट्रीय महामार्ग मेवात को दूरवर्ती बाज़ारों से जोड़ देगा। मेवात के किसी भी विद्यालय में बाग़वानी एवं खाद्य प्रसंस्करण के कौशल प्रशिक्षण की सुविधा नहीं है। इस प्रकार की सुविधा निस्संदेह अभिभावकों को अपने बच्चों को विद्यालय भेजने के लिए प्रेरित करेगी।

c) **साहसिक भ्रमण व पर्यटन -** मेवात के उत्तरी सिरे से दक्षिणी सिरे तक अरावली पर्वत शृंखला फैली हुई है। इस पर्वत माला में साहसिक भ्रमण या पर्यटन की अपार सम्भावना निहित हैं क्योंकि इस दिशा में यहाँ अंश मात्र भी कार्य नहीं हुआ है। इसलिए यहाँ के विद्यालयों में साहसिक भ्रमण या पर्यटन से संबंधित कौशल प्रशिक्षण की आवश्यकता है। इस संदर्भ में विद्यालय मुखियाँ अपने विद्यालय के बच्चों के लिए camping आदि का प्रावधान कर सकता है।

बाल विवाह एवं बलिका शिक्षा

समुदाय के लोगों से बातचीत करने पर पता लगा कि अधिकतर लोग लड़कियों को स्कूल केवल इसलिए नहीं भेजते की कहीं वे किसी लड़के के साथ भाग कर अपनी इच्छा से विवाह न कर लें । उनका मानना है लड़की का विवाह कहाँ और किसके साथ होगा, इसका अधिकार उसके माता- पिता को ही है। लड़की अपनी इच्छा से विवाह करे, यह उनके लिए घोर अपमान की बात है।

d) यहाँ की लड़कियाँ अपने पारिवारिक परिवेश में मेहंदी लगाना, चित्रकारी करना, मिट्टी की कलाकृतियाँ बनाना, फसलों के अपशिष्ट से घरेलू उपयोग की रंग-बिरंगी आकर्षक वस्तुओं (चंगेरी, डलिया आदि) का निर्माण करना आदि कौशलों में सहज ही निष्णात हो जाती है। यदि विद्यालयों में उनके इन सहज कौशलों को औपचारिक प्रशिक्षण, वस्तुओं के व्यावसायिक उत्पादन व विपणन की व्यवस्था हो जाए तो बालिका शिक्षा के विस्तार में यह कदम मील का पत्थर हो सकता है। इसी संदर्भ में यदि बालिकाओं को किस तरह अपने कौशलों को वे व्यवसायिक रूप दे सकती है, इसे और अधिक निखार सकती है, घर बैठे कैसे आत्मनिर्भर हो सकती है आदि दिशा में निर्देशन दिया जाना चाहिए।

निष्कर्ष

प्रत्येक विद्यालय मुखियाँ जिसे हरियाणा के नूँह क्षेत्र में कार्य करने का अवसर मिले, उसे अवश्य ही एक मेवात क्षेत्र में अनुभव लेना चाहिए। हरियाणा राज्य में मेवात क्षेत्र को एक अलग क्षेत्र घोषित किया गया है जिसके विभिन्न सांप्रदायिक, क्षेत्रीय, भाषीय, शैक्षिक, यहाँ के लोगों के दृष्टिकोण संबंधी कारण रहे है। इस निर्णय को समर्थन न देते हुए, मेवात क्षेत्र में प्राचार्य के रूप में कार्यरत लेखक का सुझाव यही है कि मेवात में सफल एवं उपयोगी कार्यकाल के लिए प्रत्येक मुखियाँ को सर्वप्रथम इसे हरियाणा का एक महत्त्वपूर्ण अंग मानना होगा। दूसरा यहाँ के धार्मिक विश्वासों को प्रश्न न करते हुए यहाँ के लोगों को जितना हो सके जागरूकता देते हुए अपनाना होगा। उल्लेखनीय है कि यहाँ के लोग शिक्षा तो ग्रहण करना चाहते है परन्तु अपने रूढिवादी विचारों और विश्वासों के साथ। वर्तमान समय प्रत्यक्ष रूप से इन रूढिवादी विचारों का विरोध करने का नहीं है अपितु उनको नजरअंदाज करते हुए यहाँ के नागरिकों को जीवन में सफलता, सरलता एवं प्रगति से परिचित कराना है। तदुपरांत वे स्वतः ही छात्रों को आत्मनिर्भरता का स्वाद पता चले उस दिशा में उन्हें प्रेरणा और अवसर देने है। मेवात में कार्य करना चुनौतीपूर्ण जरूर है परन्तु यहाँ किसी भी एक छात्र की सफलता का जरिया बनना आत्म संतुष्टि का चरम हो सकता है।

संदर्भ सूची

- http://www.niepa.ac.in/download/Publications/BK%20Panda%20OP%2039%20%20web.pdf
- https://www.smsfoundation.org/wp-content/uploads/2020/10/Access-to-Health-and-Education-for-Women-in-Rural-Mewat-Anjali-Godyal-Anjali-Makhija.pdf
- https://www.hindustantimes.com/cities/chandigarh-news/49-teaching-posts-in-nuh-government-schools-vacant-haryana-education-minister-101639751937625.html

निर्माणकर्त्ता
श्री जितेंद्र सिंह

स्वरूपण एवं संपादन
डॉ. रजनी कुमारी
परामर्षदाता, SLA
SCERT, Haryana

डॉ॰ जितेंद्र सिंह 'कौशिक' राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय पुनहाना नूँह, हरियाणा मे प्रधानाचार्य के पद पर सेवारत है । आप हिन्दी विषय मे पी एच डी एवं नेट क्वालिफाइड है। आपको सात वर्ष का महाविद्यालय में अध्यापन अनुभव है।

हिन्दी भाषा शिक्षण पर राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद गुरुग्राम में माड्यूल लेखन व सेतु पाठ्यक्रम निर्माण कार्य मे आपकी अहम भूमिका रही है।